दिव्यम्

संस्कृत पाठमाला

4

1. वंदना

❒ अभ्यासकंठी

1. (क) गज (ख) भूतगणादि (ग) जम्बू, चारु (घ) विकटो
   (ङ) विघ्नेश्वर पाद
2. (क) (ii) (ख) (iv) (ग) (i) (घ) (iii)
3. (क) लम्बोदर: गणेश: अस्ति।
   (ख) विघ्ननाशक: गणेश: अस्ति।
   (ग) भूतगणादि गजाननं सेवितम्।
   (घ) उमासुतं गणेश: अस्ति।
   (ङ) विनायक: कपित्थ जम्बूफल चारु भक्षणम्।

2. मम दिनचर्या

❒ अभ्यासकंठी

1. (क) प्रात:काले पञ्चवादने (ख) अहं क्रीडाक्षेत्रे
   (ग) व्यायामेन (घ) शिक्षाप्रदानि मनोरंजकानि च
   (ङ) भोजनं
2. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (v) (घ) (ii) (ङ) (i)
3. (क) अहं भूमिवन्दनं प्रात:काले करोमि।
   (ख) अहं पाठान् नववादन पर्यन्तं स्मरामि।
   (ग) अहं विद्यालयं सार्ध अष्टवादने गच्छामि।
   (घ) अहं अल्पाहारं अष्टवादने करोमि।
   (ङ) व्यायामेन शरीरं नीरोगं भवति।
4. (क) वयं विद्यालयं गच्छाम:।
   (ख) त्वं कस्मिन् समये उत्तिष्ठसि?
   (ग) मम् दिनचर्या: कठिना अस्ति।
   (घ) अहं भवद्भ्य: सवेभ्य: प्रणामं करोमि।
5. (क) मैं प्रतिदिन व्यायाम करता हूँ।
   (ख) वह मेरी माता है।
   (ग) मैं शाम को टेलीविजन नहीं देखता हूँ।
   (घ) मैं प्रात: मंत्र करता हूँ।
   (ङ) आप भूमि की वंदना करते हो।

❏

3. भारतवर्षस्य उत्सवाः

❒ अभ्यासकंठी

1. (क) (स) (ख) (ब) (ग) (अ)

2. (क) यच्छन्ति (ख) सन्ति (ग) पूज्यन्ति (घ) कुर्वन्ति (ङ) खादन्ति

3. (क) ते परस्परं <u>रङ्गं</u> प्रक्षिपन्ति।
(ख) क्रिसमस <u>वृक्षं</u> भूषयन्ति।
(ग) <u>जना:</u> लक्ष्मीं पूजयन्ति।
(घ) वयं <u>दीपान्</u> ज्वालयाम:।
(ङ) गृहे-गृहे <u>पक्वान्नानि</u> पच्यन्ते।

4. (क) पर्वेषु जना: मिष्ठान्नं खादन्ति वितरन्ति च।
(ख) होलिका पर्वे जना: परस्परं रङ्गं प्रक्षिपन्ति।
(ग) दीपावली पर्वे वयं दीपान ज्वालयाम:।

5. (क) यहाँ ईद का पर्व भी मनाया जाता है।
(ख) घर-घर में पकवान बनते हैं।
(ग) यह भाई-बहन के प्यार का त्योहार होता है।
(घ) दीपावली उनमें से एक बड़ा उत्सव है।
(ङ) स्वतंत्रता दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्वत है।

6. स्वयं कीजिए।

❒

4. गणतन्त्रदिवसः

❒ अभ्यासकंठी

1. (क) आरोहणं (ख) निर्गच्छन्ति (ग) राष्ट्रपति:
(घ) विजय चतुष्पथं (ङ) भवन्ति

2. (क) लक्षश: जना: भारतद्वारम् उभयत: एकत्रिता: भवन्ति।
(ख) राष्ट्रध्वजस्य आरोहणं भवति।
(ग) अस्माकं देश: 1947 तमे ख्रीष्टाब्दे अगस्तमासस्य पञ्चदशे दिवसे स्वतन्त्र अभवत्।
(घ) नवीन संविधानस्य घोषणा 1950 तमे ख्रीष्टाब्दे जनवरीमासस्य षड्विंशति: तमे अभवत्।
(ङ) गणतन्त्र दिवस: भारतस्य महान् राष्ट्रीय: उत्सव वर्तते।

3. (क) अस्माकं देश: 1947 तमे ख्रीष्टाब्दे अगस्तमासस्य पञ्चदशे दिवसे स्वतन्त्र अभवत्।

(ख) नवीन संविधानस्य घोषणा 1950 तमे ख्रीष्टाब्दे जनवरीमासस्य षड्विंशति: तमे अभवत्।

(ग) लक्षश: जना: भारतद्वारम् उभयत: एकत्रिता: भवन्ति।

4. (क) समारोह: मुख्यं स्थलं विजय पथे अस्ति।

(ख) गणतन्त्र दिवस: भारतस्य महान् राष्ट्रीय: उत्सव अस्ति।

(ग) गणतन्त्रराज्यस्य सर्वोच्च: शासक: राष्ट्रपति: भवति।

(घ) लक्षश: जना: भारतद्वारम् उभयत: एकत्रिता: भवन्ति।

(ङ) गणतन्त्रदिवसम् प्रत्येकस्मिन् नगरे सर्वे जना: उत्साहेन मानयन्ति।

5. (क) गणतन्त्र में राष्ट्रपति सर्वोच्च शासक होता है।

(ख) यह पर्व प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को मनाया जाता है।

(ग) लाखों लोग इंडिया गेट के दोनों ओर एकत्रित होते हैं।

(घ) तभी से इस दिन को गणतंत्र दिवस कहा जाता है।

6. स्वयं कीजिए।

❑

5. श्रीलालबहादुरशास्त्री

❒ अभ्यासकंठी

1. (क) (अ) (ख) (अ) (ग) (ब)

2. (क) कृ (ख) प्रसार (ग) स्था (घ) गम्

3. (क) हमेशा (ख) दिखाया (ग) जेल (घ) नाना

4.

	शब्द	धातु	लकार	पुरुष	वचन
(क)	अलभत्	लभ	लङ्लकार	प्रथम	एकवचन
(ख)	अकरोत्	कृ	लङ्लकार	प्रथम	एकवचन
(ग)	अगच्छत्	गम्	लङ्लकार	प्रथम	एकवचन
(घ)	अभवत्	भू	लङ्लकार	प्रथम	एकवचन

5. (क) शास्त्रीमहानुभावस्य पोषणं मातामह: परमप्रेम्णा अकरोत्।

(ख) अन्य राज्यशासकै: सह मैत्रीसम्बंधं स्थापयितुं सर्वत्र शान्ति प्रसारयितुं स: विदेशेषु अगच्छत्।

(ग) शास्त्रीमहानुभाव: श्री जवाहरलाल नेहरू महोदयस्य स्नेहभाजनम् अभूत्।

(घ) लालबहादुरशास्त्री महानुभाव: 1904 तमे वर्षे अक्टूबरमासस्य द्वितीयां तिथौ उपवाराणसि रामनगरनाम्न: ग्रामंस्वजन्मनाङ्लंकृतवान्।

(ङ) काशी विद्यापीठनाम्नि राष्ट्रीय महाविद्यालये समाधीत्य शास्त्रीपदवीम् अलभत्।

6. (क) शास्त्रीमहोदय: मधुर वक्ता: आसीत्।
(ख) बाल्यकाले स: अतीव सरल: सत्यवादी चासीत्।
(ग) स: कारागारम् अगच्छत्।
(घ) शास्त्रिन: कर्त्तव्य: कठोर: आसीत्।

❑

6. अव्यय-प्रयोग:

❑ अभ्यासकंठी

1. (क) अन्त: (ख) अन्त: (ग) उपरि (घ) अध:
(ङ) बहि: (च) निकषा

2. (क) बालक:—ब् + आ + ल् + अ + क् + अ:
(ख) समीपे—स् + अ + म् + ई + प् + ए
(ग) मूषक:—म् + ऊ + ष + अ + क् + अ:
(घ) राधिका—र् + आ + ध् + इ + क् + आ
(ङ) पेटिका—प् + ए + ट् + इ + क् + आ
(च) पथिक:—प् + अ + थ् + इ + क् + अ:
(छ) वस्त्रम्—व् + अ + स् + त् + र् + अ + म्

3. (क) गृहात् बहि: बालका: क्रीडन्ति।
(ख) खगा: वृक्षस्य उपरि निवसन्ति।
(ग) नगरम् परित: क्षेत्राणि सन्ति।
(घ) बालक: आसन्दिकाया: उपरि तिष्ठति।
(ङ) मूषक: पेटिकाया: नीचै अस्ति।
(च) पथिक: वृक्षस्य अध: सुप्त:।
(छ) कपाटिकाया: अन्त: वस्त्राणि सन्ति।

4. (क) बिडाली नीचै मूषकं खादति।
(ख) ममं मित्रं उपरि न गच्छति।
(ग) शय्यायां अध: कुक्कुर: अस्ति।
(घ) गृहस्य बहि: पशून् चरन्ति।
(ङ) कक्षायां अन्त: छात्रा: न सन्ति।

5. (क) मूषक: पेटिकाया: नीचै अस्ति।
(ख) बालिका आसन्दिकाया: उपरि तिष्ठति।
(ग) पथिक: वृक्षस्य अध: सुप्त:।
(घ) बालका: गृहात् बहि: क्रीडन्ति।
(ङ) कपाटिकाया: अन्त: वस्त्राणि सन्ति।

6. (क) राम और श्याम मित्र हैं।
   (ख) गाँव के बाहर विशाल मन्दिर है।
   (ग) गाँव के चारों ओर दो नदियाँ हैं।
   (घ) कर्म से बड़ा या छोटा नहीं होता है।
   (ङ) बन्दर वृक्ष के ऊपर रहता है।
   (च) वृक्ष के नीचे लोग बैठते हैं।
7. स्वयं कीजिए।

❑

7. सुभाषितानि

❑ अभ्यासकंठी

1. (क) नार्यस्तु, रमन्ते (ख) देवो (ग) पापस्य (घ) सत्यं
   (ङ) परमो
2. (क) आचार्य: देवो भव।
   (ख) लोभ: पापस्य कारणम्।
   (ग) विद्याविहीन: मानव: पशु: इव अस्ति।
   (घ) विद्वान् कुलीनो न करोति गर्वम्।

❑

8. विटप:

❑ अभ्यासकंठी

1. (क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✗)
   (ङ) (✓) (च) (✓)
2. (क) जीवनं (ख) शोभनं (ग) नीडं (घ) पुष्परसं
   (ङ) आश्रयं (च) विशालकार:, लहवाकारा:
3. (क) वृक्षै: वनं उपवनं वा शोभनं भवति।
   (ख) संस्कृतभाषायां वृक्षस्य अनेके पर्याया: सन्ति। यथा—तरु:, पादप:, द्रुम, वृक्ष:, शाखिन्।
   (ग) वृक्षस्य मुख्यत: दौ प्रकारौ स्त:। केचित् फलवन्त: वृक्षा: केचित् च केवल पुष्पिता: एवं छायाप्रदा: भवन्ति।
   (घ) केवलं फलवन्त: वृक्षा: सन्ति—आम्रवृक्षा:, जम्बूवृक्षा:, लीचीवृक्षा:, बदरीवृक्षा:, तूदवृक्षा:।
   (ङ) केवलं छायाप्रदा: वृक्षा: सन्ति—पिप्पलवृक्षा:, परिजातवृक्षा:, वटवृक्षा:, शाल्मलिवृक्षा:, शिंशपावृक्षा:।

4. (क) वृक्षस्य दौ प्रकारौ स्तः।
(ख) केचित् वृक्षाः फलदारं, केचित् पुष्पवन्तः च भवन्ति।
(ग) केचित् वृक्षाः विशालः केचित् लहवाः च भवन्ति।
(घ) खगाः वृक्षेषु नीडं रचयन्ति।
(ङ) मधुमक्षिकाः पुष्परसं पिबन्ति।
5. (क) मधुमक्खियाँ फूलों का रस पीती हैं।
(ख) वृक्ष के मुख्यतः दो प्रकार होते हैं।
(ग) ये वृक्ष छाया भी देते हैं।
(घ) ऐसे दानशील वृक्षों को नमस्कार है।
(ङ) इनमें कुछ वृक्ष विशाल आकार के होते हैं।
(च) अनेक प्रकार की लताएँ वृक्षों से आश्रय प्राप्त करती हैं।

❑

9. ऋतुराजः वसन्तः

❒ अभ्यासकंठी

1. (क) (ब) (ख) (स) (ग) (स) (घ) (अ)
2. (क) ऋतुराजः (ख) कमलानि (ग) वसन्तः (घ) वर्षे
(ङ) वसन्ते, मन्दं-मन्दं
3. (क) भवति (ख) अस्ति (ग) विकसति (घ) वहति (ङ) कूजति
4. (क) सरोवरेषु कमलानि विकसन्ति।
(ख) कोकिला मधुरस्वरेण कूजति।
(ग) वसन्तः, ग्रीष्मः, वर्षा, हेमन्तः शिशिरः शीतः च एते षड् ऋतवः भवन्ति।
(घ) चैत्रः, बैशाखः, ज्येष्ठः, आषाढ़ः, श्रावणः, भाद्रपदः, आश्विनः, कार्तिकः, मार्गशीर्षः, पौषः, माघः, फाल्गुनः च एते द्वादशः मासाः भवन्ति।
5. (क) एकस्मिन् वर्षे द्वादशः मासाः भवन्ति।
(ख) वसन्तः सर्वेषु ऋतुषु श्रेष्ठः वर्तते।
(ग) वसन्ते पवनः मन्दं-मन्दं वहति।
(घ) पुष्पेषु भ्रमराः गुञ्जन्ति।
(ङ) वसन्तऋतुः ऋतुराजः कथ्यते।
6. (क) कोयल मधुर स्वर में कूकती है।
(ख) तालाबों में कमल खिलते हैं।
(ग) वसन्त वर्ष की प्रथम ऋतु है।
(घ) वृक्षों पर फूल खिलते हैं।

❑

10. विद्याधनं श्रेष्ठ धनं

❐ अभ्यासकंठी

1. (क) (✓) (ख) (✓) (ग) (✗) (घ) (✓)
2. (क) वर्धते एव (ख) वितनोति (ग) विद्यादानं (घ) ह्यकाले (ङ) दानेन
3. (क) विदेश में (ख) चोरों के द्वारा चुराने योग्य
   (ग) ले जाने में (घ) सभी धनों में (ङ) नियुक्त
   (च) दु:ख को (छ) पूरा करता है
4. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (ii) (घ) (i)
   (ङ) (vi) (च) (v)
5. (क) प्रवासे मातृसदृशी विद्या गुप्तं धन स्मृतम्।
   (ख) विद्या दिक्षु कीर्तिम् वितनोति।
   (ग) अन्नदानात् परं विद्यादानं।
   (घ) विद्याधनं सर्वधनं प्रधानम्।
6. (क) विद्याधनं न चौरहार्यं।
   (ख) अन्नदानेन कतिपय क्षणं यावत् सन्तुष्टि: प्राप्यते।
   (ग) विद्या कल्पलता इव किं सिद्धयति?
   (घ) कामधेनुगुणा विद्या ह्यकाले फलदायिनी।
7. (क) न तो चोर चुरा सकता है, न राजा छीन सकता है।
   (ख) और ले जाने में भार रहित है।
   (ग) विद्या, परदेश में माता के समान और स्मरण आने पर गुप्त धन के समान है।
   (घ) विद्या कामधेनु गुण के समान है।

❑

11. यात्राया: साधनानि

❐ अभ्यासकंठी

1. (क) (अ) (ख) (ब) (ग) (ब) (घ) (अ)
2. (क) रथै:, शकटै:, गर्दभै:, गजै:, उष्ट्रै: च (ख) कष्टं
   (ख) उष्ट्र:, यात्राया:
   (घ) पर्वतीयक्षेत्रे, अश्वै:
3. (क) शीघ्र + अतिशीघ्रम (ख) इत: + ततो
   (ग) किम् + अपि (घ) इति + आदिनि

4.

	शब्दः	लिंग	वचनम्	विभक्तिः
(क)	मनुष्यः	पुल्लिग	एकवचन	प्रथमा
(ख)	जनेभ्यः	पुल्लिग	बहुवचन	चतुर्थी
(ग)	यात्रायाः	स्त्रीलिंग	एकवचन	पञ्चमी
(घ)	एतैः	पुल्लिग	बहुवचन	तृतीया

5. (क) सः श्राम्यति स्म कष्टं च अनुभवति स्म।
   (ख) मनुष्याः नौकाभिः नद्यः अपि तरन्ति स्म।
   (ग) अधुना यात्रा जनेभ्यः किमपि कष्टं न ददाति।
   (घ) यत्र वाष्पयानं न गच्छति।
   (ङ) होलिकोत्सवः भारतीयानां प्रमुखः पर्वः अस्ति।
6. (क) प्राचीनकाले जनाः पादाभ्यां दूरस्थेषु स्थानेषु गच्छति स्म। सः श्राम्यति स्म कष्टं च अनुभवति स्म।
   (ख) तस्मिन् काले जनाः रथैः, शकटैः, गर्दभैः, गजैः, उष्ट्रैः च दूराणि स्थानानि गच्छन्ति स्म।
   (ग) अधुना वाष्पयानम्, वायुयानम्, मोटरयानम् इत्यादि नवीनानि साधनानि उपलब्धानि सन्ति।
7. (क) तस्मिन् काले मनुष्याः नौकाभिः नद्यः अपि तरन्ति स्म।
   (ख) मरुस्थले प्रदेशः उष्ट्रः एव यात्रायाः साधनम् अस्ति।
   (ग) पर्वतीय क्षेत्रे जनाः अश्वैः इतस्ततो गच्छन्ति।
   (घ) अधुना यात्रा जनेभ्यः किमपि कष्टं न ददाति।
   (ङ) अस्मिन् समये यात्रायाः नवीनानि साधनानि सन्ति।
8. (क) प्राचीन काल में लोग दूर स्थान पर जाने के लिए पैदल जाते थे।
   (ख) वह थकावट और कष्ट का अनुभव करते थे।
   (ग) इनसे लोग जल्दी-से-जल्दी दूर स्थानों पर जाते हैं।
   (घ) जहाँ रेलगाड़ी नहीं जाती है, वहाँ लोग बस से यात्रा करते हैं।
   (ङ) प्राचीन काल में लोग घोड़ों और हाथियों से दूर स्थान पर जाते थे।
9. स्वयं कीजिए।

❑

12. नीतिश्लोका

❑ अभ्यासकंठी

1. (क) (✓)   (ख) (✗)   (ग) (✗)   (घ) (✓)   (ङ) (✓)
2. (क) दर्पणः   (ख) परोपकारः, पापाय   (ग) भार्या
   (घ) बकोध्यानं, तथैव च

3. (क) काकचेष्टा, बकोध्यानं, श्वाननिद्रा, अल्पहारी, गृहत्यागी च।
(ख) उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् अस्ति।
(ग) रामस्य सदृशः पुत्रः भरतस्य समोऽनुजः। सीतायाः सदृशी भार्या त्रयमेकत्र दुर्लभम्।
(घ) यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञां शास्त्रं तस्य करोति किम्।
4. (क) राम के समान पुत्र, भरत के समान भाई।
(ख) यह अपना है, यह पराया है ऐसी गणना क्षुद्र चरित्र वाले लोग करते हैं।
(ग) अठारह पुराणों में व्यास जी के दो वचन श्रेष्ठ हैं।
(घ) उदार चरित्र वालों के लिए तो संपूर्ण पृथ्वी ही परिवार के समान है।

❑

13. मूर्खमण्डलम्

❑ अभ्यासकंठी

1. (क) सुवर्णम् उत्पन्नं अभवत् (ख) जालं बध्नाति
(ग) किं करिष्यामि (घ) द्वितीयः पाशबन्धकः
2. (क) असत्यं (ख) सत्यं (ग) सत्यं (घ) असत्यं (ङ) सत्यं
3. (क) एकस्मिन पर्वते एकः महान् वृक्षः सिन्धुक नामकः कोऽपि खगः प्रतिवसति स्म।
(ख) खगस्य पुरीषे सुवर्णं विलोक्य व्याधः चकितः भूत्वा अविचारयत—'अहो, मम पञ्चाशत वर्षाणि व्यतीतानि, न कदाचिदपि परिपुरीषे सुवर्णं दृष्टम्?'
(ग) राजा तं पक्षिणं दृष्ट्वा अतीव प्रसन्नः अभवत्।
(घ) मंत्री अकथयत्—''राजन्! किं कदाचित् पक्षिपुरीषे सुवर्णं सम्भवति?''
(ङ) खगः पुरीषं अत्यजत्।
4. (क) सः खगः सुवर्णः अस्ति।
(ख) त्वं भोजनं खादसि।
(ग) व्याधः खगं गृहीतवान्।
(घ) राजा तत् न विश्वसिवान्
(ङ) यूयम् मूर्खमण्डलम् सन्ति।
5. (क) एक पर्वत पर महान वृक्ष था।
(ख) उसकी बीट में सोना देखकर आश्चर्यचकित शिकारी ने सोचा।
(ग) राजा इस पक्षी को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ।
(घ) इस पक्षी के पिंजरे की यत्नपूर्वक रक्षा करो।

❑

14. संघे शक्तिः

❒ अभ्यासकंठी

1. (क) व्याकुल: अभवत्। (ख) चटक दम्पती आस्ताम्।
   (ग) फलम् प्राप्तम् (घ) चटकाण्डानि (ङ) सहायतामयाचत्
2. (क) प्रमत्त: गज: चटकाण्डानि नष्टानि अकरोत।
   (ख) मक्षिकाऽपि तै: सह स्वमित्रस्य 'मेघनाद:' नामक मण्डूकस्य समीपम् अगच्छत्।
   (ग) तमाल वृक्षे चटक दम्पती आस्ताम्।
   (घ) अन्तत: गज: मृत:।
   (ङ) काष्ठकूट: चटकाभ्याम सह स्वमित्रस्य 'वीणारवा' नाम्ना मक्षिकाया: समीपम् अगच्छत्।
   (च) मण्डूक: तान् गज विनाशस्य उपायं अवदत्।
3. (क) उसने बहुत अधिक मदमस्त होकर वृक्ष की शाखाएँ तोड़ डालीं।
   (ख) मेघनाद ने उस हाथी के विनाश का उपाय बताया।
   (ग) उसके गाने से आनंदित होकर आँखें बंद कर ली।
   (घ) वह गड्ढे में गिर गया।

❑

15. पिपासा: काक:

❒ अभ्यासकंठी

1. (क) (अ) (ख) (ब) (ग) (स)
2. (क) अवसत् (ख) घटम् (ग) शनै:शनै: आगच्छत्
   (घ) अभवत्
3. (क) महेश: (ख) सुरेश: (ग) महेन्द्र: (घ) सुरेन्द्र:
   (ङ) जलमानयत् (च) दशानन:
4. (क) कौआ (ख) एक (ग) दिन (घ) घड़ा
   (ङ) थोड़ा (च) पीने के लिए
5. (क) रहता था (ख) हो गया था (ग) घूमता रहता था
   (घ) आ गया था (ङ) था (च) सोचा
6.

	एकवचनम्	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
(क)	अवसत्	अवसताम्	अवसन्
(ख)	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
(ग)	अभ्रमत्	अभ्रमताम्	अभ्रमन
(घ)	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
(ङ)	अपठत्	अपठताम्	अपठन्

7. (क) वने एक: काक: अवसत्।
   (ख) स: पिपासया आकुल: आसीत्।
   (ग) स: एकं घटम् अपश्यत्।
   (घ) स: एकं शिलाखण्डं क्षिप्तवान्।
   (ङ) जलम् उपरि आगतं।
8. स्वयं कीजिए।

❑

अर्द्धवार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

(अध्याय 1-8)

1. (क) (स) होली: (ख) (ब) 1966 तमे वर्षे
   (ग) (ब) अगस्त मासस्य 15 तमे दिवसे (घ) (अ) सूत्रिका:
2. (क) आरोहणं (ख) निर्गच्छन्ति (ग) राष्ट्रपति:
   (घ) विजय चतुष्पथं
3. (क) अस्माकं देश: 1947 तमे ख्रीष्टाब्दे अगस्तमासस्य पञ्चदशे दिवसे स्वतंत्र अभवत्।
   (ख) नवीन संविधानस्य घोषणा 1950 तमे ख्रीष्टाब्दे जनवरीमासस्य षड्विंशति: तमे अभवत्।
   (ग) लक्षश: जना: भारतद्वारम् उभयत: एकत्रिता: भवन्ति।
4. (क) बिडाली नीचै मूषकं खादति।
   (ख) ममं मित्रं उपरि न गच्छति।
   (ग) शय्यायां अध: कुक्कुर: अस्ति।
   (घ) गृहस्य बहि: पशून् चरन्ति।

❑

वार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

(अध्याय 9-15)

1. (क) (ब) भ्रमरा: (ख) (स) वसन्त:
   (ग) (अ) काक: (घ) (स) उपलम्
2. (क) पुष्परसं (ख) आश्रयं (ग) विशालाकार:, लहवाकार:
   (घ) वर्धते एव (ङ) वितनोति
3. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (ii) (घ) (i)
   (ङ) (vi) (च) (v)
4. (क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✗) (घ) (✓) (ङ) (✓)

❑